सभ में सुञाणनि, आशिक पंहिंजे यार खे,
अंदरि ब्राहरि दह दिसा, साणु सदा ज़ाणनि,
नंहं चोटीअ ताईं चूरि थिया, बेधिया जे ब्राणानि,
सामी सियाणनि, अहिड़ो पदु पचायो.

सामी जी कहते हैं कि प्रभु के प्रेमी/भक्त अपने प्रियतम परमात्मा को सभी पदार्थों में देखते हैं। हर वस्तु में उन्हें परमेश्वर दिखाई देता है। वे अपने प्रियतम प्रभु को अंदर-बाहर, दसों दिशाओं में, सदा अपने साथ ही समझते हैं। अर्थात् परमेश्वर कहीं भी उनसे अलग नहीं है। सच्चे प्रेमी/भक्त प्रेम के बाणों से घायल हो जाने के कारण नख-शिख तक बेसुध होकर पड़े हैं। अर्थात् वे प्रभु के प्रेम में मदमस्त हो गये हैं। ऐसा पद केवल सयाने, विवेकवान, ज्ञानीजनों ने ही प्राप्त किया है। अर्थात् ऐसे अंतर्ज्ञानी ही इस मंजिल तक पहुँच सके हैं।

जिसके मन में प्रभु के प्रति सच्चा प्रेम है, वह सचमुच प्रभु के पास हैं। क्योंकि प्रभु स्वयं ही प्रेम है। ईश्वर के प्रेम रूपी सागर में स्वयं को डुबा देनेवाला सच्चा प्रेमी-भक्त ही अनंत सुख के मोती प्राप्त कर सकता है। अपने अंत:करण में परमात्मा के दर्शन करने वाले भक्तों को यह बोध हो जाता है कि मैं उस परम-आत्मा का अंश हूँ। इतना ही नहीं, मैं परमात्मा ही हूँ- 'अहं ब्रह्मास्मि।' और यह परमात्मा प्रत्येक प्राणी के भीतर निवास करता है। यह ज्ञान हो जाने पर सच्चे भक्त/प्रेमी हर मनुष्य में परमात्मा के दर्शन करता है। वह जान लेता है कि परमेश्वर घट घट वासी है। जो ब्रह्मांड में है, वही पिंड (शरीर) में भी है। परमेश्वर के प्रेम में निमग्न प्रेमी-भक्त जन अपने भीतर और बाहर परमात्मा को ही अपने साथ पाते हैं। वे परमेश्वर को अपने आप से अलग नहीं कर सकते। संत तुकाराम महाराज के शब्दों में,

जेथे जातों तेथें तू माझा सांगाती। चालविसी हाती धरुनियां।
चालों वाटे आम्ही तुझाचि आधार। चालविसी भार सवे माझें।।

संत तुकाराम जहाँ-जहाँ जाते हैं, वहाँ परमेश्वर भी उनके संग चलते हैं। उन्हें परमेश्वर का ही आधार है और वे ही उनका हाथ पकड़कर चलाते हैं। उनका भार वहन करने वाले भी प्रभु स्वयं है। वस्तुत: भक्ति-मार्ग में भक्त परमात्मा का ही हो जाता है। परमात्मा से एकरूपता, समता स्थापित करने वाला ही परमानंद का अनुभव कर सकता है। परमेश्वर के दिव्य दर्शन करने की स्थिति 'ब्राह्मी स्थिति' होती है। ब्रह्म के स्वरूप की साक्षात् अनुभूति करते हुए उसके साथ एकरूपता स्थापित करना ही 'ब्राह्मीस्थिति' है।

■